Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Research Article

भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक : भगवान श्रीराम एवं रामायण

डॉ. रवि कुमार [1*], डॉ. धरवेश कठेरिया [2]

[1] सहायक प्रोफेसर, भाषा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत

Corresponding Author: * डॉ. रवि कुमार

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.21868020

सारांश

प्रस्तुत शोध आलेख "भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक : भगवान श्रीराम एवं रामायण" भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय विस्तार तथा भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषण करना है कि भारतीय सभ्यता के इन महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीकों ने भारत की भौगोलिक सीमाओं से बाहर विभिन्न देशों की सांस्कृतिक परंपराओं, साहित्य, कला, स्थापत्य तथा लोकजीवन को किस प्रकार प्रभावित किया। शोध में नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस, मलेशिया तथा अन्य संबंधित क्षेत्रों में विकसित रामायण परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक एवं ऐतिहासिक शोध दृष्टिकोणों पर आधारित है। शोध में वाल्मीकि रामायण सहित विभिन्न क्षेत्रीय रामायणों, ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों, साहित्यिक कृतियों तथा प्रतिष्ठित विद्वानों के अध्ययनों का समन्वित उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रसार किसी राजनीतिक या सैन्य विस्तार का परिणाम नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, व्यापारिक संपर्क, धार्मिक एवं बौद्धिक आदान-प्रदान तथा स्थानीय समाजों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के स्वैच्छिक आत्मसात की दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम था।

शोध के निष्कर्ष यह संकेत करते हैं कि विभिन्न देशों में रामायण के अनेक स्थानीय स्वरूप विकसित होने के बावजूद उसके मूल जीवन-मूल्य—सत्य, मर्यादा, न्याय, कर्तव्य, करुणा तथा लोककल्याण—सर्वत्र सुरक्षित रहे। यही सार्वभौमिक मूल्य भगवान श्रीराम एवं रामायण को भारतीय संस्कृति के ऐसे वैश्विक प्रतीक के रूप में स्थापित करते हैं, जो आज भी सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय शोध, सांस्कृतिक विरासत संरक्षण तथा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद में समान रूप से प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत अध्ययन भारतीय संस्कृति के वैश्विक आयामों को समझने की दिशा में एक प्रमाण-आधारित एवं तुलनात्मक अकादमिक योगदान प्रस्तुत करता है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2584-184X
- **Received:** 07-03-2026
- **Accepted:** 27-04-2026
- **Published:** 30-04-2026
- **MRR:**4(4); 2026: 274-287
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

कुमार र, कठेरिया ध. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक : भगवान श्रीराम एवं रामायण. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(4): 274-287.

Access this Article Online

www.mrrjournal.in

प्रमुख शब्द : भगवान श्रीराम, रामायण, भारतीय संस्कृति, वैश्विक संस्कृति, सांस्कृतिक प्रसार, सांस्कृतिक कूटनीति, दक्षिण-पूर्व एशिया, तुलनात्मक अध्ययन, रामाकियन, रीमकेर, काकाविन रामायण, वैश्विक विरासत, सभ्यतागत संवाद, सांस्कृतिक संपर्क, भारतीय सभ्यता

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं निरंतर विकसित होती सभ्यताओं में से एक है, जिसकी पहचान केवल उसकी ऐतिहासिक प्राचीनता में नहीं, बल्कि उसके सार्वभौमिक जीवन-मूल्यों, ज्ञान-परंपरा, सांस्कृतिक समन्वय तथा मानवीय दृष्टिकोण में निहित है। सहस्राब्दियों के इतिहास में भारतीय सभ्यता ने अनेक देशों एवं संस्कृतियों के साथ शांतिपूर्ण संवाद स्थापित किया और व्यापार, धर्म, दर्शन, साहित्य, कला तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विश्व की विविध सभ्यताओं को प्रभावित किया। भारतीय संस्कृति का यह वैश्विक विस्तार किसी राजनीतिक या सैन्य विजय का परिणाम नहीं था, बल्कि ज्ञान, नैतिकता, सह-अस्तित्व और सांस्कृतिक समन्वय पर आधारित एक दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रिया थी। इसी प्रक्रिया ने भारतीय संस्कृति के अनेक प्रतीकों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित किया, जिनमें भगवान श्रीराम एवं रामायण का स्थान अत्यंत विशिष्ट है।

भगवान श्रीराम भारतीय सांस्कृतिक चेतना में केवल एक धार्मिक आराध्य पुरुष नहीं हैं, बल्कि मर्यादा, सत्य, न्याय, कर्तव्य, करुणा, लोककल्याण तथा आदर्श शासन के ऐसे प्रतीक हैं, जिनकी स्वीकार्यता समय, समाज और भौगोलिक सीमाओं से परे दिखाई देती है। इसी प्रकार रामायण केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता की सांस्कृतिक स्मृति, नैतिक दर्शन तथा मानवीय मूल्यों का ऐसा आधारग्रंथ है, जिसने विभिन्न देशों की साहित्यिक परंपराओं, कला, स्थापत्य, रंगमंच, लोकजीवन तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को गहराई से प्रभावित किया। यही कारण है कि रामायण का अध्ययन आज केवल धार्मिक या साहित्यिक विमर्श तक सीमित नहीं है, बल्कि इतिहास, तुलनात्मक साहित्य, संस्कृति अध्ययन, पुरातत्त्व, मानवशास्त्र तथा अंतरराष्ट्रीय संबंधों जैसे अनेक अकादमिक अनुशासनों का भी महत्वपूर्ण विषय बन चुका है।

भारतीय उपमहाद्वीप से दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया तक स्थापित प्राचीन व्यापारिक मार्गों, समुद्री संपर्कों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विद्वानों एवं धार्मिक प्रतिनिधियों के आवागमन ने भगवान श्रीराम एवं रामायण के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस, मलेशिया तथा अन्य देशों में रामायण के अनेक स्थानीय रूप विकसित हुए। इन रूपों में मूल कथा का आधार सुरक्षित रहा, किन्तु प्रत्येक समाज ने अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों, भाषाई परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसका पुनर्सृजन भी किया। इस प्रकार रामायण विश्व की उन विरल सांस्कृतिक परंपराओं में सम्मिलित हो गई, जिसने विविध सभ्यताओं में अपनी उपस्थिति बनाए रखते हुए स्थानीय सांस्कृतिक पहचान के साथ सफल समन्वय स्थापित किया।

यद्यपि भगवान श्रीराम एवं रामायण पर भारत तथा विदेशों में अनेक अध्ययन उपलब्ध हैं, तथापि अधिकांश शोध किसी एक देश, भाषा, साहित्यिक परंपरा अथवा धार्मिक दृष्टिकोण तक सीमित रहे हैं। विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति, उनके स्थानीय रूपांतरण, ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक प्रभाव तथा भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार में उनकी भूमिका का समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। विशेष रूप से हिंदी भाषा में ऐसे शोध अपेक्षाकृत विरल हैं, जिनमें ऐतिहासिक, साहित्यिक, पुरातात्त्विक तथा सांस्कृतिक स्रोतों का समन्वित उपयोग करते हुए इस विषय का बहुआयामी विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हो। यही तथ्य प्रस्तुत शोध की आवश्यकता तथा इसकी अकादमिक प्रासंगिकता को और अधिक महत्वपूर्ण बनाता है।

प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य भगवान श्रीराम एवं रामायण को केवल भारतीय धार्मिक परंपरा के संदर्भ में नहीं, बल्कि **भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक** के रूप में समझना तथा उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। इस अध्ययन में विभिन्न देशों में विकसित रामायण परंपराओं, उपलब्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों, साहित्यिक कृतियों, स्थापत्य, कला, लोकसंस्कृति तथा समकालीन सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का समेकित विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया गया है कि भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक मूल्य विभिन्न समाजों में किस प्रकार स्वीकार किए गए तथा उन्होंने स्थानीय सांस्कृतिक जीवन के साथ किस प्रकार रचनात्मक समन्वय स्थापित किया।

प्रस्तुत शोध वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक, तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक दृष्टिकोणों पर आधारित है तथा इसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के समन्वित अध्ययन के माध्यम से विषय का वस्तुनिष्ठ विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रयास किसी धार्मिक या वैचारिक आग्रह की स्थापना करना नहीं, बल्कि उपलब्ध ऐतिहासिक एवं अकादमिक साक्ष्यों के आधार पर भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का संतुलित, प्रमाण-आधारित तथा शोधपरक विवेचन प्रस्तुत करना है। आशा है कि यह शोध भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय आयामों को समझने, तुलनात्मक रामायण अध्ययन को समृद्ध करने तथा भविष्य के शोधार्थियों के लिए एक उपयोगी संदर्भ सामग्री के रूप में योगदान देगा।

2. शोध की रूपरेखा

2.1 विषय परिचय

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम एवं सतत् जीवित सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है, जिसकी विशेषता केवल उसकी प्राचीनता में नहीं, बल्कि विभिन्न सभ्यताओं एवं संस्कृतियों के साथ उसके निरंतर संवाद, आदान-प्रदान और आत्मसात करने की क्षमता में भी निहित है। भारतीय दर्शन, धर्म, साहित्य, कला और जीवन-मूल्यों ने सहस्राब्दियों से एशिया सहित विश्व के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इन्हीं सांस्कृतिक प्रतीकों में **भगवान श्रीराम एवं रामायण** का स्थान अत्यंत विशिष्ट है। श्रीराम केवल भारतीय धार्मिक परंपरा के आराध्य पुरुष नहीं हैं, बल्कि आदर्श शासन, नैतिक आचरण, कर्तव्यपरायणता, पारिवारिक मर्यादा और मानवीय मूल्यों के सार्वभौमिक प्रतीक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। इसी प्रकार *रामायण* केवल एक महाकाव्य नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना का ऐसा आधारग्रंथ है जिसने विभिन्न देशों की साहित्यिक, कलात्मक, धार्मिक और सामाजिक परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया है।

भारतीय संस्कृति केवल धार्मिक आस्थाओं अथवा परंपराओं का समुच्चय नहीं है, बल्कि जीवन-दर्शन, नैतिक मूल्यों, ज्ञान-परंपरा, कला, साहित्य, भाषा, सामाजिक व्यवस्था तथा आध्यात्मिक चिंतन का समन्वित स्वरूप है। इसकी सबसे प्रमुख विशेषता विविधता में एकता, सह-अस्तित्व, समन्वय तथा आत्मसात करने की क्षमता रही है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति ने अपने विकासक्रम में अनेक

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सभ्यताओं के साथ संवाद स्थापित किया और बिना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित किए ज्ञान, व्यापार, धर्म, दर्शन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विश्व के अनेक क्षेत्रों को प्रभावित किया। इस सांस्कृतिक प्रसार ने भारतीय सभ्यता के अनेक प्रतीकों को अंतरराष्ट्रीय पहचान प्रदान की, जिनमें भगवान श्रीराम एवं रामायण का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

किसी भी सभ्यता का **वैश्विक सांस्कृतिक प्रतीक (Global Cultural Symbol)** वह व्यक्तित्व, ग्रंथ, विचार या परंपरा होती है, जो अपनी मूल भौगोलिक सीमाओं से आगे बढ़कर विभिन्न देशों और संस्कृतियों द्वारा स्वीकार, आत्मसात एवं संरक्षित की जाए तथा जिसके मूल मूल्य सार्वभौमिक मानवीय जीवन से जुड़ते हों। इस दृष्टि से भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति के ऐसे वैश्विक प्रतीक हैं, जिन्होंने विभिन्न देशों की साहित्यिक परंपराओं, कला, स्थापत्य, लोकसंस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों को प्रभावित करते हुए अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है।

भारत से बाहर भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति केवल धार्मिक प्रसार का परिणाम नहीं है। प्राचीन समुद्री व्यापार, सांस्कृतिक संपर्क, राजनयिक संबंध, विद्वानों एवं यात्रियों के आवागमन तथा भारतीय सभ्यता के शांतिपूर्ण विस्तार ने दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया सहित अनेक क्षेत्रों में रामायण परंपरा के विकास का मार्ग प्रशस्त किया। परिणामस्वरूप नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, जावा, बाली, सुमात्रा, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस और मलेशिया जैसे देशों ने रामकथा को अपनी स्थानीय सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप आत्मसात किया। इन देशों में रामायण के विविध रूप, मंदिर, शिल्प, नृत्य-नाट्य, लोकपरंपराएँ तथा साहित्यिक कृतियाँ इस सांस्कृतिक प्रभाव के जीवंत प्रमाण हैं।

इसी व्यापक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत शोध आलेख **"भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक : भगवान श्रीराम एवं रामायण"** का उद्देश्य यह समझना है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय सीमाओं से परे किस प्रकार वैश्विक सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा बने। यह अध्ययन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और तुलनात्मक दृष्टि से उपलब्ध स्रोतों के आधार पर उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव, स्थानीय रूपांतरण तथा समकालीन प्रासंगिकता का समग्र एवं संतुलित विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है।

2.2 शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य भगवान श्रीराम एवं रामायण को केवल भारतीय धार्मिक एवं सांस्कृतिक परंपरा के संदर्भ में नहीं, बल्कि **भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक** के रूप में समझना और उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का प्रमाण-आधारित अध्ययन प्रस्तुत करना है। यह शोध उन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं कलात्मक प्रक्रियाओं का विश्लेषण करता है, जिनके माध्यम से रामायण भारत की सीमाओं से बाहर विभिन्न देशों तक पहुँची तथा स्थानीय समाजों ने उसे अपनी सांस्कृतिक परंपराओं के अनुरूप आत्मसात किया।

इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति, उनके स्थानीय स्वरूप, सांस्कृतिक प्रभाव, ऐतिहासिक साक्ष्यों तथा समकालीन प्रासंगिकता का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना है। साथ ही, उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के आधार पर यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि भगवान श्रीराम एवं रामायण किस प्रकार भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार, सांस्कृतिक संवाद और सभ्यतागत आदान-प्रदान के महत्वपूर्ण माध्यम बने।

यह शोध केवल तथ्यों के संकलन तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि ऐतिहासिक प्रमाणों, साहित्यिक परंपराओं, पुरातात्त्विक साक्ष्यों तथा विद्वानों के विचारों के समन्वित अध्ययन के माध्यम से एक संतुलित, निष्पक्ष एवं शोधपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करेगा। इसका उद्देश्य विषय की व्यापक समझ विकसित करना तथा भारतीय संस्कृति की वैश्विक उपस्थिति के अध्ययन में एक सार्थक अकादमिक योगदान देना है। यह अध्ययन भारतीय संस्कृति के वैश्विक इतिहास की पुनर्व्याख्या (reinterpretation) का प्रयास भी है।

2.3 शोध की आवश्यकता

भगवान श्रीराम एवं रामायण पर भारतीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनेक शोध, ग्रंथ और अध्ययन उपलब्ध हैं, किन्तु अधिकांश अध्ययन या तो धार्मिक, साहित्यिक अथवा किसी एक देश अथवा क्षेत्र विशेष तक सीमित हैं। विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति, उनके सांस्कृतिक रूपांतरण, ऐतिहासिक विकास तथा भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार में उनकी भूमिका का समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। विशेष रूप से हिंदी भाषा में ऐसा शोध अपेक्षाकृत दुर्लभ है, जिसमें विभिन्न देशों के ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों के आधार पर इस विषय का समेकित विश्लेषण प्रस्तुत किया गया हो।

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सांस्कृतिक विरासत, सभ्यतागत संवाद तथा सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) के अध्ययन का महत्व निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे समय में भगवान श्रीराम एवं रामायण का अध्ययन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि इतिहास, संस्कृति, साहित्य, कला, पुरातत्त्व तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन का भी महत्वपूर्ण आधार बन जाता है। यह शोध इस व्यापक संदर्भ में यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं ने विभिन्न देशों की स्थानीय संस्कृतियों के साथ किस प्रकार संवाद स्थापित किया और समय के साथ किस प्रकार उनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बन गईं।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की आवश्यकता केवल उपलब्ध जानकारियों के संकलन तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न स्रोतों के तुलनात्मक एवं प्रमाण-आधारित विश्लेषण के माध्यम से भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का एक संतुलित, समग्र एवं शोधपरक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है। यह अध्ययन भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय आयामों को समझने के साथ-साथ भविष्य के शोधार्थियों के लिए भी एक उपयोगी संदर्भ-आधार प्रदान करने का प्रयास करेगा.

2.4 शोध प्रश्न

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित प्रमुख शोध प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है—

1. भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीक के रूप में किस प्रकार स्थापित हुए?

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

2. भारत से बाहर विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण का प्रसार किन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ?
3. नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया, कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार तथा अन्य देशों में रामायण के स्थानीय रूपों एवं सांस्कृतिक परंपराओं की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
4. उपलब्ध ऐतिहासिक, साहित्यिक, पुरातात्त्विक एवं सांस्कृतिक साक्ष्य भगवान श्रीराम एवं रामायण की अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति के संबंध में क्या संकेत देते हैं?
5. समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति, सांस्कृतिक कूटनीति तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद में किस प्रकार प्रासंगिक हैं?

2.5 अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का क्षेत्र भगवान श्रीराम एवं रामायण की भारतीय सीमाओं से परे वैश्विक उपस्थिति के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं सभ्यतागत अध्ययन तक सीमित है। इस अध्ययन में विशेष रूप से उन देशों एवं क्षेत्रों को सम्मिलित किया गया है जहाँ रामायण परंपरा का ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक प्रभाव अथवा साहित्यिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इनमें प्रमुख रूप से नेपाल, श्रीलंका, इंडोनेशिया (जावा, बाली एवं सुमात्रा), कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस, मलेशिया तथा अन्य संबंधित क्षेत्र शामिल हैं। जबकि अन्य कई देश हैं जहां बड़ी संख्या में भारतीय लोग गए यथा – मॉरीशस, गुयाना, जमैका, त्रिनिदाद, आदि (भारतीय डायस्पोरा) को इस अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है । अखंड (वृहत) भारत क्षेत्र में उपलब्ध स्रोतों को देखने का प्रयत्न किया गया है।
यह अध्ययन भगवान श्रीराम एवं रामायण के धार्मिक पक्ष की अपेक्षा उनके ऐतिहासिक विकास, सांस्कृतिक प्रभाव, स्थानीय रूपांतरण, साहित्यिक परंपराओं, कला, स्थापत्य, लोकजीवन तथा उपलब्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों के तुलनात्मक अध्ययन पर अधिक केंद्रित है। साथ ही, समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में उनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता, अकादमिक अध्ययन तथा सांस्कृतिक कूटनीति में उनकी भूमिका का भी समावेश किया गया है।
यह शोध उपलब्ध प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों, प्रमाणित शोध साहित्य तथा ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर विषय का संतुलित एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत करता है। जिन विषयों पर विद्वानों के बीच मतभेद उपलब्ध हैं, वहाँ उन्हें यथासंभव निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करते हुए किसी एक मत को अंतिम सत्य के रूप में स्थापित करने के बजाय तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

3. अध्ययन का आयाम

3.1 अध्ययन की प्रकृति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) प्रकृति का है, जिसका उद्देश्य भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन मात्र घटनाओं या तथ्यों के वर्णन तक सीमित नहीं है, बल्कि उपलब्ध स्रोतों, ऐतिहासिक साक्ष्यों, साहित्यिक परंपराओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के आधार पर विषय की व्यापक एवं समग्र समझ विकसित करने का प्रयास करता है। इस शोध में भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय विस्तार को विभिन्न देशों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिस्थितियों के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।
अध्ययन का स्वरूप अंतःविषयक (Interdisciplinary) है, क्योंकि इसमें इतिहास, संस्कृति, धर्म, साहित्य, पुरातत्त्व, कला तथा सभ्यता अध्ययन जैसे विभिन्न ज्ञान-विषयों का समन्वित उपयोग किया गया है। इससे विषय का बहुआयामी विश्लेषण संभव हो सका है तथा भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति को केवल धार्मिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत और सभ्यतागत संवाद के व्यापक परिप्रेक्ष्य में समझने का प्रयास किया गया है।

3.2 अध्ययन की दृष्टि एवं शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में विषय की प्रकृति के अनुरूप विभिन्न शोध दृष्टिकोणों एवं पद्धतियों का समन्वित उपयोग किया गया है। अध्ययन का आधार मुख्यतः **वर्णनात्मक (Descriptive)** तथा **विश्लेषणात्मक (Analytical)** दृष्टिकोण है, जिसके माध्यम से उपलब्ध ऐतिहासिक तथ्यों, सांस्कृतिक परंपराओं तथा साहित्यिक स्रोतों का क्रमबद्ध प्रस्तुतीकरण एवं उनका सम्यक् विश्लेषण किया गया है।
इसके साथ ही **तुलनात्मक (Comparative)** दृष्टिकोण का उपयोग विभिन्न देशों में विकसित रामायण परंपराओं, सांस्कृतिक रूपांतरणों तथा स्थानीय विशेषताओं के तुलनात्मक अध्ययन के लिए किया गया है। वहीं **ऐतिहासिक (Historical)** दृष्टिकोण के माध्यम से भगवान श्रीराम एवं रामायण के अंतरराष्ट्रीय प्रसार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक संपर्क तथा सभ्यतागत विकास की प्रक्रियाओं का अध्ययन किया गया है। **सांस्कृतिक (Cultural)** दृष्टिकोण के अंतर्गत विभिन्न समाजों द्वारा रामायण के स्थानीय रूपांतरण, लोकपरंपराओं, धार्मिक व्यवहार, कला एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।
शोध पद्धति के स्तर पर ऐतिहासिक अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, साहित्यिक अध्ययन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा स्रोत विश्लेषण का समन्वित उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य किसी पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष का समर्थन करना नहीं, बल्कि उपलब्ध साक्ष्यों एवं प्रमाणित स्रोतों के आधार पर विषय का संतुलित, वस्तुनिष्ठ एवं शोधपरक विश्लेषण प्रस्तुत करना है।

3.3 स्रोतों का स्वरूप

प्रस्तुत शोध मुख्यतः प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। प्राथमिक स्रोतों में वाल्मीकि रामायण सहित अन्य प्राचीन ग्रंथ, उपलब्ध शिलालेख, अभिलेख, पुरातात्विक साक्ष्य, प्राचीन पांडुलिपियाँ तथा विभिन्न देशों में उपलब्ध स्थानीय रामायण परंपराओं से संबंधित मूल स्रोतों को यथासंभव प्राथमिकता दी गई है। इसके अतिरिक्त विभिन्न देशों की सांस्कृतिक धरोहरों, मंदिरों, मूर्तियों तथा ऐतिहासिक स्थलों से संबंधित उपलब्ध प्रमाणों का भी उपयोग किया गया है।
द्वितीयक स्रोतों के रूप में प्रतिष्ठित विद्वानों की पुस्तकें, शोधपत्र, विश्वविद्यालयीय शोधप्रबंध, शोध संस्थानों के प्रकाशन, संग्रहालयों के अभिलेख, अंतरराष्ट्रीय संगठनों की प्रकाशित सामग्री तथा अन्य प्रमाणिक अकादमिक स्रोतों का उपयोग किया गया है। विभिन्न स्रोतों से प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक अध्ययन कर उनकी विश्वसनीयता का

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

परीक्षण किया गया है, ताकि शोध निष्कर्ष अधिक संतुलित एवं प्रमाण-आधारित हो सके।

3.4 अध्ययन की सीमाएँ

प्रत्येक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक शोध की भाँति इस अध्ययन की भी कुछ स्वाभाविक सीमाएँ हैं। भगवान श्रीराम एवं रामायण की परंपरा अनेक देशों में विभिन्न कालखंडों तथा विविध सांस्कृतिक संदर्भों में विकसित हुई है, जिसके कारण सभी क्षेत्रों के लिए समान मात्रा एवं समान गुणवत्ता के ऐतिहासिक स्रोत उपलब्ध नहीं हैं। कुछ देशों में पर्याप्त अभिलेखीय एवं पुरातात्त्विक प्रमाण उपलब्ध हैं, जबकि कुछ क्षेत्रों में अध्ययन मुख्यतः साहित्यिक, सांस्कृतिक अथवा लोकपरंपराओं पर आधारित है।

यह शोध उपलब्ध एवं प्रमाणित स्रोतों तक सीमित है। जिन विषयों पर विद्वानों के बीच मतभेद या स्रोतों की सीमित उपलब्धता है, वहाँ किसी एक मत को अंतिम सत्य के रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर तुलनात्मक एवं संतुलित दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसी प्रकार यह अध्ययन भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति के प्रमुख ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक आयामों पर केंद्रित है; अतः प्रत्येक देश अथवा प्रत्येक स्थानीय परंपरा का अत्यंत विस्तृत विवरण प्रस्तुत करना इस शोध के क्षेत्र में सम्मिलित नहीं है।

4. भारतीय संस्कृति के वैश्विक विस्तार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय संस्कृति का इतिहास केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि प्राचीन काल से ही इसका प्रभाव एशिया तथा विश्व के अनेक क्षेत्रों में विविध रूपों में परिलक्षित होता है। व्यापार, समुद्री यात्राओं, धार्मिक संपर्कों, विद्वानों के आवागमन, सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा राजनयिक संबंधों के माध्यम से भारतीय सभ्यता ने अनेक देशों के साथ निरंतर संवाद स्थापित किया। इस संवाद का स्वरूप मुख्यतः सांस्कृतिक एवं बौद्धिक था, जिसने स्थानीय समाजों को प्रभावित करते हुए भारतीय दर्शन, साहित्य, कला, स्थापत्य, धार्मिक परंपराओं तथा सामाजिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारतीय संस्कृति के इस वैश्विक विस्तार में भगवान श्रीराम एवं रामायण का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। रामायण केवल भारत का एक महाकाव्य नहीं रही, बल्कि समय के साथ यह अनेक देशों की सांस्कृतिक स्मृति, साहित्यिक परंपरा, लोकजीवन तथा कलात्मक अभिव्यक्ति का अभिन्न अंग बन गई। विभिन्न देशों ने अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक आवश्यकताओं तथा स्थानीय परंपराओं के अनुरूप रामकथा का पुनर्सृजन किया, जिसके परिणामस्वरूप रामायण के अनेक क्षेत्रीय स्वरूप विकसित हुए। इन रूपांतरणों में कथा का मूल स्वरूप सुरक्षित रहा, जबकि स्थानीय संस्कृति के अनुरूप पात्रों, घटनाओं तथा प्रस्तुति शैली में विविध परिवर्तन भी दिखाई देते हैं।

दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव का सबसे सशक्त प्रमाण रामायण परंपरा का व्यापक विस्तार है। नेपाल से लेकर इंडोनेशिया तक तथा श्रीलंका से लेकर कंबोडिया, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस और मलेशिया तक रामायण केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि साहित्य, नृत्य, रंगमंच, स्थापत्य, मूर्तिकला तथा लोकसंस्कृति के विविध रूपों में जीवित परंपरा के रूप में विकसित हुई। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि भारतीय संस्कृति का प्रभाव किसी राजनीतिक विस्तार का परिणाम नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, ज्ञान-विनिमय तथा स्थानीय समाजों द्वारा स्वैच्छिक सांस्कृतिक आत्मसात की दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम था।

प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य भारतीय संस्कृति के इसी वैश्विक विस्तार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना है। इसके अंतर्गत उन प्रमुख ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं सभ्यतागत प्रक्रियाओं का विश्लेषण किया जाएगा, जिनके माध्यम से भगवान श्रीराम एवं रामायण भारत की सीमाओं से बाहर विभिन्न देशों तक पहुँचे, वहाँ की सांस्कृतिक परंपराओं में समाहित हुए तथा कालांतर में वैश्विक सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में स्थापित हुए।

4.1 भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार

भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार मानव इतिहास की उन विशिष्ट प्रक्रियाओं में से एक है, जिसमें सांस्कृतिक प्रभाव का आधार सैन्य विजय या राजनीतिक प्रभुत्व नहीं, बल्कि ज्ञान, व्यापार, धर्म, दर्शन, साहित्य और सांस्कृतिक आदान-प्रदान रहा। प्राचीन भारत के व्यापारी, साधु, विद्वान, शिल्पकार तथा समुद्री यात्री भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर अनेक क्षेत्रों तक पहुँचे और अपने साथ केवल वस्तुओं का ही नहीं, बल्कि भाषा, लिपि, धार्मिक विचारों, कलात्मक परंपराओं तथा सामाजिक मूल्यों का भी प्रसार किया। इस प्रक्रिया ने विशेष रूप से दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में भारतीय सांस्कृतिक तत्वों के विकास की आधारभूमि तैयार की।

ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दी के उत्तरार्द्ध से लेकर मध्यकाल के प्रारंभिक चरण तक भारत का समुद्री व्यापार अत्यंत सक्रिय था। बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर के समुद्री मार्ग भारत को श्रीलंका, म्यांमार, मलय प्रायद्वीप, इंडोनेशिया तथा कंबोडिया जैसे क्षेत्रों से जोड़ते थे। इन व्यापारिक संपर्कों के साथ-साथ ब्राह्मण विद्वानों, बौद्ध भिक्षुओं, धार्मिक दूतों तथा सांस्कृतिक प्रतिनिधियों का भी निरंतर आवागमन हुआ। परिणामस्वरूप भारतीय धार्मिक अवधारणाएँ, संस्कृत भाषा, ब्राह्मी से विकसित लिपियाँ, महाकाव्य परंपरा तथा सांस्कृतिक प्रतीक इन क्षेत्रों में क्रमशः स्थापित होने लगे।

भारतीय संस्कृति के प्रसार की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह रही कि उसने स्थानीय संस्कृतियों पर अपना वर्चस्व स्थापित करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उनके साथ संवाद एवं समन्वय का मार्ग अपनाया। यही कारण है कि विभिन्न देशों में भारतीय सांस्कृतिक तत्व स्थानीय परंपराओं के साथ समन्वित होकर नए सांस्कृतिक रूपों में विकसित हुए। भगवान श्रीराम एवं रामायण की विभिन्न स्थानीय परंपराएँ इसी सांस्कृतिक समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार राजनीतिक शक्ति की अपेक्षा सांस्कृतिक आकर्षण, बौद्धिक प्रभाव तथा मानवीय मूल्यों पर अधिक आधारित था।

4.2 भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रसार

भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रसार भारतीय संस्कृति के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। यह प्रसार किसी एक समय अथवा एक माध्यम से नहीं हुआ, बल्कि अनेक शताब्दियों तक चलने वाली सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक एवं व्यापारिक प्रक्रियाओं का परिणाम था। प्राचीन भारत से दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया तक

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

स्थापित समुद्री और स्थल मार्गों ने न केवल व्यापार को बढ़ावा दिया, बल्कि विचारों, धार्मिक मान्यताओं, साहित्य, कला एवं सामाजिक मूल्यों के आदान-प्रदान को भी संभव बनाया। इसी व्यापक सांस्कृतिक संपर्क के माध्यम से भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय उपमहाद्वीप से बाहर विभिन्न देशों तक पहुँचे और वहाँ की सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग बन गए।

भगवान श्रीराम एवं रामायण के अंतरराष्ट्रीय प्रसार में अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक माध्यमों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्राचीन भारतीय व्यापारी समुद्री एवं स्थल व्यापार मार्गों के माध्यम से दक्षिण तथा दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँचे, जहाँ उनके साथ भारतीय भाषा, साहित्य, धार्मिक परंपराएँ और सांस्कृतिक मूल्य भी पहुँचे। ब्राह्मण विद्वानों ने स्थानीय राजदरबारों में धार्मिक ग्रंथों, संस्कृत साहित्य तथा राजधर्म की परंपराओं का परिचय कराया, जबकि बौद्ध भिक्षुओं ने सांस्कृतिक एवं बौद्धिक आदान-प्रदान के माध्यम से भारतीय महाकाव्यों के प्रसार में अप्रत्यक्ष योगदान दिया। इसके अतिरिक्त राजदूतों, शिल्पकारों, वास्तुकारों, कलाकारों तथा शिक्षण परंपराओं से जुड़े विद्वानों ने भी भारतीय सांस्कृतिक प्रतीकों को स्थानीय समाजों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। परिणामस्वरूप रामायण केवल एक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि शिक्षा, साहित्य, कला, स्थापत्य और लोकजीवन के विविध माध्यमों से विभिन्न देशों की सांस्कृतिक चेतना का अभिन्न अंग बनती चली गई।

रामायण के प्रसार में संस्कृत भाषा, ब्राह्मण विद्वानों, बौद्ध भिक्षुओं, व्यापारिक समुदायों तथा स्थानीय राजवंशों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारतीय महाकाव्यों और पुराणों का प्रभाव उन क्षेत्रों तक पहुँचा जहाँ भारतीय संस्कृति के साथ दीर्घकालिक संपर्क स्थापित हुआ। समय के साथ विभिन्न देशों ने रामायण को केवल अनूदित नहीं किया, बल्कि अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक संरचना तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसका पुनर्सृजन भी किया। परिणामस्वरूप रामायण के अनेक क्षेत्रीय संस्करण विकसित हुए, जिनमें मूल कथा की संरचना सुरक्षित रही, किंतु पात्रों, घटनाओं, भाषा, शैली तथा सांस्कृतिक संदर्भों में स्थानीय विशेषताओं का समावेश हो गया।

रामायण की इस बहुरूपी परंपरा को समझाने में भारतीय विद्वान **ए. के. रामानुजन** का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अपने प्रसिद्ध निबंध Many Ramayanas: Five Examples and Three Thoughts on Translation में उन्होंने प्रतिपादित किया कि रामायण किसी एक स्थिर पाठ तक सीमित नहीं है, बल्कि विभिन्न भाषाओं, संस्कृतियों और ऐतिहासिक परिस्थितियों में इसके अनेक रूप विकसित हुए हैं। प्रत्येक समाज ने अपने सांस्कृतिक अनुभवों, धार्मिक मान्यताओं तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप रामकथा का पुनर्पाठ और पुनर्सृजन किया। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में विकसित रामायण परंपराएँ इस सांस्कृतिक बहुलता तथा रचनात्मक अनुकूलन का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में विकसित रामायण परंपराएँ इस सांस्कृतिक अनुकूलन (Cultural Adaptation) का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। थाईलैंड में रामाकियन, कंबोडिया में रीमकेर, इंडोनेशिया में काकाविन रामायण, मलेशिया में हिकायत सेरी रामा तथा म्यांमार में यामा ज़टडॉ जैसी कृतियाँ यह दर्शाती हैं कि रामकथा ने स्थानीय भाषाओं, साहित्यिक परंपराओं और सांस्कृतिक जीवन के साथ गहरा संबंध स्थापित किया। इन रूपांतरणों ने रामायण को केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्रीय साहित्य, लोककला, रंगमंच, नृत्य एवं सांस्कृतिक पहचान के महत्वपूर्ण आधार के रूप में स्थापित किया।

भगवान श्रीराम की छवि भी विभिन्न देशों में स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप विकसित हुई। कहीं वे आदर्श राजा, कहीं धर्मनिष्ठ शासक, कहीं न्यायप्रिय नायक और कहीं नैतिक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हुए। यद्यपि प्रस्तुति में विविधता दिखाई देती है, तथापि सत्य, मर्यादा, कर्तव्य, त्याग और लोककल्याण जैसे उनके मूल आदर्श लगभग सभी परंपराओं में समान रूप से विद्यमान रहे। यही कारण है कि श्रीराम की स्वीकार्यता किसी एक धर्म, भाषा अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे विभिन्न सभ्यताओं के साझा सांस्कृतिक मूल्यों का प्रतिनिधित्व करने लगे।

उपलब्ध ऐतिहासिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक साक्ष्य यह संकेत करते हैं कि रामायण का वैश्विक प्रसार किसी राजनीतिक विस्तार का परिणाम नहीं था, बल्कि सांस्कृतिक संवाद, परस्पर सम्मान तथा स्थानीय समाजों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक तत्वों के स्वैच्छिक आत्मसात की दीर्घकालिक प्रक्रिया का परिणाम था। इसी विशेषता ने भगवान श्रीराम एवं रामायण को भारतीय संस्कृति के ऐसे वैश्विक प्रतीक के रूप में स्थापित किया, जिनकी उपस्थिति आज भी अनेक देशों की सांस्कृतिक स्मृति, कला, साहित्य और लोकजीवन में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

4.3 विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति

भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण विभिन्न देशों में विकसित उनकी स्थानीय परंपराएँ, साहित्य, कला, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ हैं। यद्यपि प्रत्येक देश की ऐतिहासिक परिस्थितियाँ, धार्मिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक संरचनाएँ भिन्न रही हैं, फिर भी रामायण ने इन सभी क्षेत्रों में किसी न किसी रूप में गहरा प्रभाव छोड़ा है। कहीं यह राजसत्ता के आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित हुई, कहीं राष्ट्रीय साहित्य का आधार बनी, तो कहीं लोकजीवन, रंगमंच और धार्मिक परंपराओं का अभिन्न अंग बन गई। यह विविधता इस तथ्य का प्रमाण है कि रामायण का वैश्विक प्रभाव एकरूप नहीं था, बल्कि स्थानीय संस्कृतियों के साथ संवाद और समन्वय की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित हुआ।

इस अध्ययन में उन प्रमुख देशों एवं क्षेत्रों का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, जहाँ भगवान श्रीराम एवं रामायण की ऐतिहासिक, साहित्यिक अथवा सांस्कृतिक उपस्थिति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(क) नेपाल

नेपाल और भारत के सांस्कृतिक संबंध अत्यंत प्राचीन एवं गहरे रहे हैं। भगवान श्रीराम की कथा में जनकपुर का विशेष महत्व है, जो माता सीता की जन्मस्थली है। इस कारण नेपाल की सांस्कृतिक स्मृति में रामायण केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान का भी महत्वपूर्ण आधार है। मैथिली परंपरा, जनकपुर की धार्मिक विरासत, विवाह पंचमी जैसे उत्सव तथा स्थानीय साहित्य में रामकथा की निरंतर उपस्थिति भारत और नेपाल के साझा सांस्कृतिक इतिहास को अभिव्यक्त करती है। नेपाल में वाल्मीकि रामायण के साथ-साथ

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

भानुभक्त आचार्य द्वारा नेपाली भाषा में रचित रामायण ने इस परंपरा को जनसामान्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(ख) श्रीलंका

श्रीलंका का संबंध रामायण से विशेष रूप से लंका प्रसंग के कारण जुड़ा हुआ है। स्थानीय परंपराओं, लोकविश्वासों तथा अनेक स्थलों को रामायण की घटनाओं से संबंधित माना जाता है। यद्यपि श्रीलंका में रामायण की व्याख्याएँ भारत से कुछ भिन्न भी मिलती हैं, फिर भी रामायण पर्यटन, सांस्कृतिक अध्ययन तथा ऐतिहासिक विमर्श के क्षेत्र में इसका महत्व निरंतर बढ़ रहा है। सीता एलिया, अशोक वाटिका से संबंधित परंपराएँ तथा अनेक स्थानीय स्थलों की पहचान इस सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा मानी जाती है।

(ग) इंडोनेशिया (जावा, बाली एवं सुमात्रा)

इंडोनेशिया विश्व का सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्या वाला देश होने के बावजूद रामायण परंपरा को अपनी सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण अंग मानता है। जावा-सुमात्रा क्षेत्र में प्राचीन जावाई भाषा में रचित काकाविन रामायण तथा बाली की जीवंत रामायण परंपरा भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। **काकाविन रामायण** वहाँ की लोक कला वायंग कुलित (Wayang Kulit) का मुख्य भाग बनी, जो वर्तमान समय तक जीवित है। योग्याकार्ता और प्रांबानन मंदिर परिसर में आयोजित रामायण बैले (Ramayana Ballet) आज भी विश्वभर के पर्यटकों को आकर्षित करता है। जावा-सुमात्रा और बाली की कठपुतली परंपरा (Wayang Kulit) में रामकथा का महत्वपूर्ण स्थान है।

(घ) कंबोडिया

कंबोडिया भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। प्राचीन खमेर साम्राज्य के काल में भारतीय धर्म, दर्शन, भाषा तथा साहित्य का व्यापक प्रभाव इस क्षेत्र में स्थापित हुआ। कंबोडियाई रामायण, जिसे **'रीमकेर' (Reamker)** के नाम से जाना जाता है, वाल्मीकि रामायण से प्रेरित होने के बावजूद स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों से समृद्ध स्वतंत्र साहित्यिक कृति के रूप में विकसित हुई। इसमें रामकथा को खमेर समाज की सांस्कृतिक संवेदनाओं, नैतिक मूल्यों तथा राजकीय आदर्शों के अनुरूप रूपांतरित किया गया है।

कंबोडिया के विश्वप्रसिद्ध **अंगकोर वाट** तथा **अंगकोर थॉम** सहित अनेक मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण रामायण प्रसंग इस सांस्कृतिक प्रभाव के उत्कृष्ट प्रमाण हैं। युद्ध, वनवास, सीता-हरण तथा लंका विजय जैसे प्रसंगों का अत्यंत कलात्मक अंकन यह दर्शाता है कि रामायण केवल धार्मिक आख्यान नहीं रही, बल्कि खमेर स्थापत्य एवं शिल्पकला की प्रेरणास्रोत भी बनी। आज भी शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच तथा सांस्कृतिक आयोजनों में रीमकेर का नियमित मंचन कंबोडिया की जीवित सांस्कृतिक परंपरा का महत्वपूर्ण अंग है। यह तथ्य संकेत करता है कि खमेर राजसत्ता ने रामायण को केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि राज्य की वैचारिक एवं सांस्कृतिक वैधता के स्रोत के रूप में भी स्वीकार किया।

(ङ) थाईलैंड

थाईलैंड में भगवान श्रीराम एवं रामायण का प्रभाव अत्यंत गहरा एवं व्यापक है। यहाँ की राष्ट्रीय रामायण **'रामाकियन' (Ramakien)** के नाम से प्रसिद्ध है, जिसे थाई साहित्य की महानतम कृतियों में स्थान प्राप्त है। यद्यपि रामाकियन का मूल आधार वाल्मीकि रामायण है, फिर भी इसमें स्थानीय लोकविश्वासों, राजनीतिक आदर्शों तथा थाई सांस्कृतिक तत्वों का व्यापक समावेश हुआ है। थाई राजपरंपरा में 'राम' नाम का विशेष महत्व है। वर्तमान तक चक्री वंश के अनेक राजाओं ने अपने राजकीय नाम के साथ 'राम' (Rama) की उपाधि धारण की है। राजधानी बैंकॉक स्थित **ग्रैंड पैलेस** तथा **वाट फ्रा कैव (Temple of the Emerald Buddha)** की भित्तिचित्र श्रृंखलाओं में रामाकियन के विस्तृत दृश्य अंकित हैं, जो थाई कला एवं राष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न भाग हैं। इसके अतिरिक्त थाई मुखौटा नृत्य-नाटक **'खोन' (Khon)** में रामाकियन का मंचन आज भी अत्यंत लोकप्रिय है और इसे यूनेस्को द्वारा अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी मान्यता प्राप्त है।

(च) म्यांमार

म्यांमार में रामायण परंपरा **'यामा ज़टडॉ' (Yama Zatdaw)** के नाम से विकसित हुई, जिसे बर्मी साहित्य एवं रंगमंच की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर माना जाता है। यह परंपरा भारतीय, थाई तथा स्थानीय बर्मी सांस्कृतिक प्रभावों के समन्वय से विकसित हुई है। यहाँ भगवान श्रीराम को 'यामा' के नाम से जाना जाता है तथा उनकी कथा लोकनाट्यों, नृत्य-नाटिकाओं और साहित्यिक कृतियों में व्यापक रूप से प्रस्तुत की जाती रही है। यामा ज़टडॉ में मूल कथा का आधार सुरक्षित रहते हुए भी अनेक स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों का समावेश किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि म्यांमार ने रामायण को केवल ग्रहण नहीं किया, बल्कि उसे अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं एवं सामाजिक संदर्भों के अनुरूप नया स्वरूप भी प्रदान किया। आज भी पारंपरिक बर्मी रंगमंच एवं सांस्कृतिक उत्सवों में रामायण आधारित प्रस्तुतियाँ इस परंपरा की निरंतरता को प्रमाणित करती हैं।

(छ) लाओस

लाओस में रामायण **'फ्रा लाक फ्रा लाम' (Phra Lak Phra Lam)** के नाम से प्रसिद्ध है। यह कृति स्थानीय बौद्ध परंपराओं तथा रामायण कथा का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। लाओ संस्कृति में भगवान श्रीराम केवल आदर्श राजा ही नहीं, बल्कि धर्म, न्याय एवं लोककल्याण के प्रतीक के रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। लाओस के बौद्ध मंदिरों की भित्तिचित्र परंपरा, लोककथाओं तथा धार्मिक साहित्य में फ्रा लाक फ्रा लाम का विशेष स्थान है। यह परंपरा स्पष्ट करती है कि भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव स्थानीय बौद्ध सांस्कृतिक जीवन के साथ समन्वित होकर एक नवीन सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुआ।

(ज) मलेशिया

मलेशिया में रामायण की स्थानीय परंपरा **'हिकायत सेरी रामा' (Hikayat Seri Rama)** के रूप में विकसित हुई। इस कृति में मूल रामायण कथा को मलय साहित्यिक शैली तथा स्थानीय सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुरूप रूपांतरित किया गया है। यद्यपि मलेशिया में इस्लाम प्रमुख धर्म है, फिर भी रामायण का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

महत्व लंबे समय तक बना रहा है। विशेष रूप से मलय लोकनाट्य एवं '**वायंग कुलित' (Wayang Kulit)** की परंपरा में रामायण कथाओं का मंचन अत्यंत लोकप्रिय रहा है। इससे यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक परिवर्तन के बावजूद रामायण का सांस्कृतिक प्रभाव लंबे समय तक स्थानीय समाज में विद्यमान रहा और उसने लोककला तथा साहित्य को गहराई से प्रभावित किया।

(झ) अन्य प्रमुख देश एवं क्षेत्र

उपर्युक्त देशों के अतिरिक्त वियतनाम, सिंगापुर तथा एशिया के अन्य कुछ क्षेत्रों में भी रामायण के सांस्कृतिक प्रभाव के विविध प्रमाण प्राप्त होते हैं। प्रवासी भारतीय समुदायों के माध्यम से मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद एवं टोबैगो, गुयाना, दक्षिण अफ्रीका तथा अन्य देशों में भी रामायण आज धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है। इन देशों में रामायण पाठ, रामलीला, सांस्कृतिक समारोह तथा धार्मिक उत्सव भारतीय सांस्कृतिक पहचान के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

विभिन्न देशों में भगवान श्रीराम एवं रामायण की उपस्थिति का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि रामायण का वैश्विक प्रसार किसी एकरूप सांस्कृतिक विस्तार का परिणाम नहीं था। प्रत्येक देश ने अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों, धार्मिक परंपराओं, भाषाई संरचना तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप रामकथा का पुनर्सृजन किया। यही कारण है कि यद्यपि रामायण के विभिन्न स्थानीय संस्करणों में कथात्मक एवं सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है, तथापि भगवान श्रीराम के आदर्श, नैतिक मूल्य, धर्मपालन, न्यायप्रियता तथा लोककल्याण की मूल अवधारणाएँ लगभग सभी परंपराओं में समान रूप से संरक्षित रही हैं। यह सांस्कृतिक निरंतरता भगवान श्रीराम एवं रामायण को भारतीय संस्कृति के वास्तविक वैश्विक प्रतीक के रूप में स्थापित करती है।

4.4 स्थानीय रामायण परंपराएँ

भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि विभिन्न देशों ने रामायण को केवल अनूदित ग्रंथ के रूप में स्वीकार नहीं किया, बल्कि अपनी भाषा, संस्कृति, धार्मिक मान्यताओं तथा सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप उसका पुनर्सृजन भी किया। परिणामस्वरूप रामायण के अनेक स्थानीय संस्करण विकसित हुए, जो मूल कथा से प्रेरित होने के बावजूद अपने-अपने सांस्कृतिक परिवेश की विशिष्ट पहचान प्रस्तुत करते हैं। यही विविधता रामायण को विश्व की सबसे व्यापक रूप से रूपांतरित महाकाव्य परंपराओं में स्थान प्रदान करती है।

भारत की **वाल्मीकि रामायण** इस परंपरा का मूल आधार मानी जाती है, किंतु समय के साथ विभिन्न देशों में रामकथा का स्थानीयकरण (Localization) हुआ। इस प्रक्रिया में मूल कथा का नैतिक एवं दार्शनिक स्वरूप सुरक्षित रहा, जबकि पात्रों की प्रस्तुति, घटनाओं का विस्तार, भाषा, शैली, सांस्कृतिक प्रतीकों तथा धार्मिक संदर्भों में स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप परिवर्तन किए गए। यह परिवर्तन केवल साहित्यिक प्रयोग नहीं थे, बल्कि उन समाजों की सांस्कृतिक चेतना और ऐतिहासिक अनुभवों का भी प्रतिबिंब थे।

रामायण के विभिन्न क्षेत्रीय रूपों का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मूल कथा की संरचना समान रहते हुए भी प्रत्येक समाज ने उसे अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित किया। **वाल्मीकि रामायण** भारतीय परंपरा का मूल स्रोत मानी जाती है, जबकि थाईलैंड की **रामाकियन** में राजसत्ता एवं राष्ट्रीय आदर्शों पर विशेष बल दिया गया है। कंबोडिया की **रीमकेर** करुणा, नैतिकता एवं राजधर्म के समन्वय को प्रमुखता देती है। इंडोनेशिया की **काकाविन रामायण** संस्कृत काव्य परंपरा और जावानी संस्कृति का उत्कृष्ट समागम प्रस्तुत करती है। म्यांमार की **यामा ज़टडॉ** रंगमंचीय एवं लोकनाट्य परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है, जबकि मलेशिया की **हिकायत सेरी रामा** मलय साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप विकसित हुई। यह तुलनात्मक स्वरूप स्पष्ट करता है कि रामायण का वैश्विक विकास सांस्कृतिक विविधता और मूल मानवीय मूल्यों के संतुलित समन्वय का परिणाम है।

थाईलैंड की **रामाकियन (Ramakien)** में राजसत्ता, शौर्य एवं राष्ट्रीय गौरव पर विशेष बल दिया गया है। कंबोडिया की **रीमकेर (Reamker)** में नैतिकता, करुणा और मानवीय संबंधों का प्रभावशाली चित्रण मिलता है। इंडोनेशिया की **काकाविन रामायण (Kakawin Ramayana)** संस्कृत काव्यशैली और जावानी सांस्कृतिक परंपराओं का सुंदर समन्वय प्रस्तुत करती है। लाओस की **फ्रा लाक फ्रा लाम (Phra Lak Phra Lam)** में बौद्ध दर्शन का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, जबकि मलेशिया की **हिकायत सेरी रामा (Hikayat Seri Rama)** मलय साहित्यिक परंपरा के अनुरूप विकसित हुई। म्यांमार की **यामा ज़टडॉ (Yama Zatdaw)** स्थानीय रंगमंच और लोकनाट्य परंपरा से गहराई से जुड़ी हुई है।

नेपाल की रामायण परंपरा भी अत्यंत समृद्ध है। **भानुभक्त आचार्य** द्वारा नेपाली भाषा में किया गया रामायण का काव्यानुवाद न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसने रामकथा को जनसामान्य तक पहुँचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी प्रकार मैथिली, अवधी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की रामायण परंपराओं ने नेपाल के सांस्कृतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया।

इन स्थानीय रामायणों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि विभिन्न देशों ने भगवान श्रीराम को केवल धार्मिक आराध्य के रूप में नहीं देखा, बल्कि उन्हें आदर्श शासक, न्यायप्रिय नायक, मर्यादा, सत्य, करुणा तथा लोककल्याण के प्रतीक के रूप में स्वीकार किया। इस कारण रामायण स्थानीय समाजों की नैतिक शिक्षा, राजकीय आदर्श, लोककला तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का भी आधार बन गई।

स्थानीय रामायण परंपराओं की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनकी **सांस्कृतिक अनुकूलन क्षमता** है। उन्होंने अपनी मूल आत्मा को सुरक्षित रखते हुए स्थानीय भाषाओं, रीति-रिवाजों, धार्मिक मान्यताओं और कलात्मक परंपराओं के साथ ऐसा समन्वय स्थापित किया कि वे संबंधित समाजों की सांस्कृतिक पहचान का स्थायी हिस्सा बन गईं। यही कारण है कि रामायण आज भी विभिन्न देशों में केवल ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विद्यमान है।

स्थानीय रामायण परंपराओं का तुलनात्मक अध्ययन यह सिद्ध करता है कि किसी सांस्कृतिक ग्रंथ की वास्तविक शक्ति उसके शाब्दिक अनुवाद में नहीं, बल्कि विभिन्न समाजों द्वारा उसे आत्मसात करने की क्षमता में निहित होती है। रामायण का वैश्विक विकास इस तथ्य का प्रमाण है कि सार्वभौमिक मानवीय मूल्य—जैसे सत्य, धर्म, कर्तव्य, करुणा और न्याय—भौगोलिक सीमाओं से परे भी समान रूप से स्वीकार किए जा सकते हैं। यही कारण है कि विभिन्न रूपों में

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

विकसित होने के बावजूद रामायण की मूल सांस्कृतिक एवं नैतिक चेतना आज भी विश्व के अनेक देशों में समान रूप से विद्यमान है।

4.5 सांस्कृतिक प्रभाव

भगवान श्रीराम एवं रामायण का प्रभाव केवल धार्मिक आस्था तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने विभिन्न देशों के सामाजिक जीवन, साहित्य, कला, शिक्षा, लोकपरंपराओं तथा राजनीतिक संस्कृति को भी गहराई से प्रभावित किया। जिन क्षेत्रों में भारतीय संस्कृति का संपर्क स्थापित हुआ, वहाँ रामायण ने नैतिक आदर्शों, राजधर्म, पारिवारिक मूल्यों तथा सामाजिक मर्यादाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस प्रकार रामायण केवल एक साहित्यिक ग्रंथ नहीं रही, बल्कि सांस्कृतिक जीवन का सक्रिय एवं प्रेरणादायी स्रोत बन गई।

दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में भगवान श्रीराम आदर्श शासक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। न्याय, सत्य, कर्तव्य, लोककल्याण तथा मर्यादा जैसे उनके गुणों को शासन और सामाजिक जीवन के आदर्श के रूप में स्वीकार किया गया। थाईलैंड, कंबोडिया तथा इंडोनेशिया जैसे देशों में राजकीय परंपराओं, दरबारी साहित्य तथा सांस्कृतिक आयोजनों में रामायण का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि रामायण ने केवल धार्मिक चेतना को नहीं, बल्कि राजनीतिक एवं सामाजिक मूल्यों को भी प्रभावित किया।

लोकजीवन में भी रामायण की गहरी छाप दिखाई देती है। विवाह, उत्सव, लोकगीत, लोकनाट्य, कठपुतली कला, पारंपरिक नृत्य तथा धार्मिक अनुष्ठानों में रामकथा से संबंधित अनेक प्रसंग आज भी जीवित हैं। विशेष रूप से इंडोनेशिया की वायंग कुलित, थाईलैंड का खोन नृत्य, कंबोडिया का शास्त्रीय नृत्य तथा भारत और नेपाल की रामलीला परंपराएँ इस सांस्कृतिक निरंतरता के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। इन कलात्मक अभिव्यक्तियों ने रामायण को पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

साहित्यिक दृष्टि से भी रामायण ने अनेक भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं को समृद्ध किया। विभिन्न देशों में स्थानीय भाषाओं में रचित रामायणों ने न केवल साहित्य का विकास किया, बल्कि स्थानीय भाषाओं को सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का प्रभावशाली माध्यम भी बनाया। इसी प्रकार चित्रकला, मूर्तिकला, मंदिर स्थापत्य तथा भित्तिचित्रों में रामायण प्रसंगों का अंकन यह दर्शाता है कि इस महाकाव्य ने दृश्य कला की परंपराओं को भी गहराई से प्रभावित किया।

समकालीन समय में भी रामायण का सांस्कृतिक प्रभाव निरंतर बना हुआ है। अनेक देशों में रामायण आधारित सांस्कृतिक उत्सव, अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन, शैक्षणिक शोध, रंगमंचीय प्रस्तुतियाँ तथा पर्यटन गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि रामायण केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान वैश्विक सांस्कृतिक संवाद का भी सक्रिय माध्यम बनी हुई है।

रामायण के सांस्कृतिक प्रभाव का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि किसी सभ्यता की वास्तविक शक्ति उसके सैन्य या राजनीतिक विस्तार में नहीं, बल्कि उसके मूल्यों की सार्वभौमिक स्वीकार्यता में निहित होती है। भगवान श्रीराम एवं रामायण ने विभिन्न देशों में नैतिकता, सांस्कृतिक समन्वय, सामाजिक मर्यादा और कलात्मक सृजन की जिस परंपरा को प्रेरित किया, वह भारतीय संस्कृति की दीर्घकालिक वैश्विक स्वीकार्यता का सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करती है।

4.6 ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रमाण

भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति केवल साहित्यिक परंपराओं अथवा लोकविश्वासों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके समर्थन में अनेक ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक प्रमाण भी उपलब्ध हैं। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में प्राप्त मंदिर, शिलालेख, मूर्तियाँ, भित्तिचित्र, पांडुलिपियाँ तथा सांस्कृतिक अभिलेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि रामायण ने इन क्षेत्रों के सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि इन प्रमाणों की प्रकृति, काल तथा स्वरूप विभिन्न देशों में अलग-अलग हैं, फिर भी उनका समग्र अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव की व्यापकता को स्पष्ट करता है।

स्थापत्य कला के क्षेत्र में कंबोडिया का **अंगकोर वाट** तथा **अंगकोर थॉम** रामायण परंपरा के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं। इन मंदिरों की दीवारों पर अंकित रामायण प्रसंग केवल धार्मिक श्रद्धा का ही नहीं, बल्कि उस समय की कलात्मक उत्कृष्टता तथा भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव का भी परिचायक हैं। इसी प्रकार थाईलैंड के **ग्रैंड पैलेस** और **वाट फ्रा कैव** की भित्तिचित्र श्रृंखलाएँ रामाकियन के विस्तृत दृश्यों को संरक्षित किए हुए हैं, जो यह दर्शाती हैं कि रामायण राष्ट्रीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी थी।

इंडोनेशिया के **प्रांबानन (Prambanan)** मंदिर परिसर में उत्कीर्ण रामायण प्रसंग तथा वहाँ नियमित रूप से प्रस्तुत किया जाने वाला **रामायण बैले** (Ramayana Ballet) साहित्य, स्थापत्य और प्रदर्शन कला के अद्वितीय समन्वय का उदाहरण है। जावा तथा बाली की प्राचीन पांडुलिपियाँ, काकाविन रामायण के हस्तलिखित संस्करण तथा वायंग कुलित की परंपरा भी इस सांस्कृतिक निरंतरता के सशक्त प्रमाण प्रस्तुत करती हैं। नेपाल के जनकपुर क्षेत्र की धार्मिक परंपराएँ, प्राचीन मंदिर तथा भानुभक्त रामायण की साहित्यिक विरासत भी इस सांस्कृतिक संबंध को पुष्ट करती हैं।

पुरातात्त्विक एवं अभिलेखीय साक्ष्यों के अतिरिक्त विभिन्न देशों के राजकीय अभिलेख, शिलालेख तथा प्राचीन साहित्यिक स्रोत यह संकेत देते हैं कि भारतीय महाकाव्यों एवं पुराणों का प्रभाव स्थानीय राजवंशों और सांस्कृतिक संस्थाओं तक भी पहुँचा था। अनेक स्थानों पर संस्कृत भाषा, ब्राह्मी से विकसित लिपियों तथा भारतीय धार्मिक प्रतीकों की उपस्थिति यह दर्शाती है कि भारतीय सांस्कृतिक संपर्क केवल धार्मिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था, बल्कि शिक्षा, प्रशासन, साहित्य तथा कला जैसे विविध क्षेत्रों में भी उसका प्रभाव विद्यमान था।

इसके अतिरिक्त अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (Intangible Cultural Heritage) के रूप में संरक्षित नृत्य-नाट्य, लोकनाट्य, पारंपरिक संगीत, उत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठान भी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रमाण हैं। थाईलैंड का **खोन**, इंडोनेशिया का **वायंग कुलित**, कंबोडिया का शास्त्रीय नृत्य तथा भारत, नेपाल और प्रवासी भारतीय समुदायों में आयोजित **रामलीला** जैसी परंपराएँ यह स्पष्ट करती हैं कि रामायण केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि आज भी जीवंत सांस्कृतिक परंपरा के रूप में विद्यमान है।

हालाँकि इन प्रमाणों का अध्ययन करते समय यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी ऐतिहासिक स्थलों, स्थानीय परंपराओं अथवा

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

लोकविश्वासों को समान स्तर का प्रत्यक्ष ऐतिहासिक प्रमाण नहीं माना जा सकता। इसलिए प्रस्तुत शोध में साहित्यिक स्रोतों, पुरातात्त्विक साक्ष्यों, अभिलेखीय प्रमाणों तथा आधुनिक शोध अध्ययनों का तुलनात्मक परीक्षण करते हुए संतुलित निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। यही शोध-पद्धति विषय की अकादमिक विश्वसनीयता को सुनिश्चित करती है।

ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रमाणों का समग्र अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रभाव केवल परंपरागत मान्यताओं पर आधारित नहीं है, बल्कि उसके समर्थन में साहित्यिक, स्थापत्य, कलात्मक, अभिलेखीय तथा सांस्कृतिक साक्ष्यों का व्यापक आधार उपलब्ध है। यद्यपि विभिन्न देशों में इन प्रमाणों की प्रकृति एवं ऐतिहासिक संदर्भ अलग-अलग हैं, तथापि उनका समेकित मूल्यांकन यह सिद्ध करता है कि रामायण ने भारतीय संस्कृति को विश्व के अनेक भागों से जोड़ने वाले एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक सेतु के रूप में कार्य किया। इसी आधार पर भगवान श्रीराम एवं रामायण को भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रतीकों में प्रमुख स्थान प्राप्त होता है।

5. कला, साहित्य, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत

भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रभाव केवल धार्मिक परंपराओं अथवा साहित्यिक कृतियों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उन्होंने विश्व की विविध कलात्मक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी गहराई से प्रभावित किया। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों में रामायण ने साहित्य, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्य, रंगमंच तथा लोकसंस्कृति को नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार रामायण केवल एक महाकाव्य नहीं रही, बल्कि विभिन्न सभ्यताओं के सांस्कृतिक विकास का प्रेरणास्रोत बनकर उभरी। यही कारण है कि आज भी अनेक देशों की सांस्कृतिक पहचान में रामायण की स्पष्ट छाप दिखाई देती है।

5.1 साहित्यिक परंपरा

रामायण विश्व के उन विरल महाकाव्यों में है, जिसने अनेक भाषाओं और साहित्यिक परंपराओं को प्रेरित किया। भारत में वाल्मीकि रामायण से प्रारंभ हुई यह परंपरा समय के साथ विभिन्न भाषाओं एवं देशों में नए रूपों में विकसित हुई। प्रत्येक समाज ने अपने सांस्कृतिक अनुभवों, धार्मिक विश्वासों और सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप रामकथा को पुनः अभिव्यक्त किया, जिससे स्थानीय साहित्य समृद्ध हुआ और सांस्कृतिक विविधता को नई अभिव्यक्ति मिली।

नेपाल में भानुभक्त रामायण, थाईलैंड में रामाकियन, कंबोडिया में रीमकेर, इंडोनेशिया में काकाविन रामायण, लाओस में फ्रा लाक फ्रा लाम तथा मलेशिया में हिकायत सेरी रामा जैसी कृतियाँ केवल अनुवाद नहीं हैं, बल्कि स्वतंत्र साहित्यिक रचनाएँ हैं। इन ग्रंथों ने स्थानीय भाषाओं के विकास, काव्य परंपरा के विस्तार तथा सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी भाषा, शैली, पात्र-चित्रण तथा कथात्मक प्रस्तुति स्थानीय साहित्यिक परंपराओं के अनुरूप विकसित हुई, जिससे प्रत्येक देश की सांस्कृतिक विशिष्टता भी सुरक्षित रही।

तुलनात्मक साहित्यिक दृष्टि से विभिन्न भाषाओं में रचित रामायणें केवल अनुवाद नहीं, बल्कि स्वतंत्र सृजनात्मक कृतियाँ हैं। भारत में **वाल्मीकि रामायण** मूल आधार प्रदान करती है, जबकि **कंबन** की इरामावतारम् (तमिल रामायण) ने तमिल भक्ति साहित्य को नई दिशा दी। **गोस्वामी तुलसीदास** की *रामचरितमानस* ने उत्तर भारतीय लोकभाषा और भक्तिकाव्य पर गहरा प्रभाव डाला। नेपाल में **भानुभक्त आचार्य** की नेपाली रामायण ने रामकथा को जनभाषा में लोकप्रिय बनाया। इसी प्रकार थाईलैंड की **रामाकियन** तथा कंबोडिया की **रीमकेर** ने स्थानीय साहित्य, भाषा एवं सांस्कृतिक चेतना को समृद्ध किया। इन सभी कृतियों का तुलनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि रामायण की साहित्यिक परंपरा एक ही स्रोत से प्रेरित होते हुए भी विभिन्न भाषाओं एवं संस्कृतियों में स्वतंत्र रचनात्मक अभिव्यक्ति के रूप में विकसित हुई।

रामायण की साहित्यिक परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि उसने स्थानीय समाजों को एक साझा नैतिक एवं सांस्कृतिक आधार प्रदान किया। सत्य, मर्यादा, कर्तव्य, त्याग और न्याय जैसे मूल्य इन सभी साहित्यिक रूपों में समान रूप से विद्यमान रहे, जिससे रामायण केवल धार्मिक ग्रंथ न रहकर मानवीय मूल्यों के वैश्विक साहित्य के रूप में स्थापित हुई। साहित्यिक दृष्टि से रामायण की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उसने विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों को एक साझा नैतिक आख्यान प्रदान किया। स्थानीय रूपांतरणों के बावजूद उसके मूल जीवन-मूल्य सुरक्षित रहे, जो उसकी सार्वभौमिक स्वीकार्यता का प्रमाण हैं।

5.2 मंदिर एवं स्थापत्य

रामायण का प्रभाव विश्व के अनेक देशों की स्थापत्य कला में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक मंदिरों, राजप्रासादों तथा धार्मिक स्मारकों में रामायण के प्रसंगों का अंकन यह सिद्ध करता है कि इस महाकाव्य ने स्थापत्य एवं शिल्प परंपराओं को गहराई से प्रभावित किया। इन स्थलों पर रामायण केवल धार्मिक आख्यान के रूप में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक एवं राजकीय आदर्श के रूप में भी प्रतिष्ठित हुई।

कंबोडिया के अंगकोर वाट एवं अंगकोर थॉम, इंडोनेशिया के प्रांबानन मंदिर, थाईलैंड के ग्रैंड पैलेस तथा वाट फ्रा कैव, नेपाल के जनकपुर धाम तथा भारत के अनेक प्राचीन मंदिर इस सांस्कृतिक विरासत के प्रमुख उदाहरण हैं। इन स्थलों पर उत्कीर्ण रामायण प्रसंग न केवल उस समय की कलात्मक उत्कृष्टता को प्रदर्शित करते हैं, बल्कि यह भी बताते हैं कि रामायण स्थानीय स्थापत्य परंपराओं का अभिन्न अंग बन चुकी थी।

इन स्थापत्य स्मारकों का महत्व केवल ऐतिहासिक नहीं है। आज भी ये स्थल सांस्कृतिक पर्यटन, अंतरराष्ट्रीय शोध तथा सांस्कृतिक कूटनीति के प्रमुख केंद्र बने हुए हैं। इनके संरक्षण से यह भी स्पष्ट होता है कि संबंधित देशों ने रामायण को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार किया है। मंदिरों एवं स्थापत्य स्मारकों में अंकित रामायण प्रसंग यह प्रमाणित करते हैं कि भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव केवल विचारों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने स्थायी भौतिक सांस्कृतिक विरासत का भी निर्माण किया, जो आज तक संरक्षित है।

5.3 मूर्तिकला एवं चित्रकला

रामायण की कथाएँ मूर्तिकला एवं चित्रकला की परंपराओं में भी व्यापक रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। मंदिरों की भित्तियों, स्तंभों, द्वारों तथा स्वतंत्र मूर्तियों में रामायण के अनेक प्रसंगों का अत्यंत कलात्मक

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अंकन किया गया है। सीता स्वयंवर, वनवास, स्वर्णमृग, सेतु-निर्माण, रावण-वध तथा राज्याभिषेक जैसे प्रसंगों को विभिन्न कलाकारों ने अपनी सांस्कृतिक शैली के अनुरूप चित्रित किया।

थाईलैंड के ग्रैंड पैलेस की भित्तिचित्र श्रृंखला, कंबोडिया के मंदिरों की शिल्पकला तथा इंडोनेशिया के प्रांबानन मंदिर की उत्कीर्ण कथाएँ यह दर्शाती हैं कि रामायण ने दृश्य कला को भी समृद्ध किया। इन कलात्मक अभिव्यक्तियों में स्थानीय परिधान, स्थापत्य शैली तथा सामाजिक जीवन का चित्रण यह प्रमाणित करता है कि प्रत्येक समाज ने रामकथा को अपने सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप पुनः सृजित किया। मूर्तिकला एवं चित्रकला में रामायण की उपस्थिति यह स्पष्ट करती है कि सांस्कृतिक प्रभाव केवल साहित्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि दृश्य कला के माध्यम से भी पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित होता रहा।

5.4 नृत्य, रंगमंच एवं लोकपरंपराएँ

रामायण की जीवंतता का सबसे सशक्त प्रमाण उसकी प्रदर्शन कलाओं में निरंतर उपस्थिति है। विभिन्न देशों में नृत्य, रंगमंच, कठपुतली, लोकनाट्य तथा संगीत के माध्यम से रामकथा का मंचन सदियों से किया जाता रहा है। इन प्रस्तुतियों ने रामायण को केवल पढ़े जाने वाले ग्रंथ के स्थान पर जनजीवन का जीवंत सांस्कृतिक अनुभव बना दिया। भारत की रामलीला, इंडोनेशिया का वायंग कुलित तथा रामायण बैले, थाईलैंड का खोन नृत्य, कंबोडिया का शास्त्रीय नृत्य एवं म्यांमार का यामा ज़टडॉ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन प्रस्तुतियों में स्थानीय संगीत, वेशभूषा, अभिनय शैली तथा नृत्य तकनीकों का समावेश यह दर्शाता है कि रामायण ने प्रत्येक समाज में नई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को जन्म दिया।

लोकजीवन में भी रामायण से जुड़े उत्सव, लोकगीत, कथावाचन, धार्मिक अनुष्ठान तथा सामाजिक परंपराएँ आज भी अनेक देशों में जीवित हैं। इससे स्पष्ट होता है कि रामायण केवल ऐतिहासिक विरासत नहीं, बल्कि निरंतर विकसित होती सांस्कृतिक परंपरा है। प्रदर्शन कलाओं में रामायण की निरंतर उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि किसी सांस्कृतिक परंपरा की वास्तविक शक्ति उसके जीवित सामाजिक व्यवहार में होती है। रामायण ने यही जीवंतता विभिन्न देशों की लोकसंस्कृतियों में स्थापित की।

5.5 सांस्कृतिक विरासत के रूप में रामायण

समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में रामायण केवल भारतीय अथवा एशियाई सांस्कृतिक धरोहर नहीं रही, बल्कि विश्व की साझा सांस्कृतिक विरासत के रूप में भी स्थापित हो रही है। विभिन्न देशों में रामायण आधारित शोध, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, सांस्कृतिक महोत्सव, संग्रहालय, डिजिटल अभिलेख तथा पर्यटन परियोजनाएँ इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इससे रामायण की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक प्रासंगिकता नए संदर्भों में पुनर्स्थापित हो रही है।

रामायण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद, सह-अस्तित्व तथा साझा मानवीय मूल्यों का आधार प्रदान करती है। सत्य, न्याय, करुणा, कर्तव्य, मर्यादा एवं लोककल्याण जैसे मूल्य आज भी वैश्विक समाज के लिए प्रासंगिक हैं। यही कारण है कि रामायण केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य की सांस्कृतिक चेतना का भी महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है।

कला, साहित्य, स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत के तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रभाव किसी एक धार्मिक परंपरा तक सीमित नहीं है। साहित्य से लेकर स्थापत्य, दृश्य कला से लेकर प्रदर्शन कला तथा लोकजीवन से लेकर आधुनिक सांस्कृतिक संस्थानों तक रामायण की निरंतर उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि उसने विभिन्न सभ्यताओं के सांस्कृतिक विकास को गहराई से प्रभावित किया है। यही बहुआयामी प्रभाव भगवान श्रीराम एवं रामायण को भारतीय संस्कृति के वास्तविक वैश्विक प्रतीकों के रूप में स्थापित करता है।

6. समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य

वैश्वीकरण, सांस्कृतिक कूटनीति तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के वर्तमान युग में भगवान श्रीराम एवं रामायण का महत्व केवल ऐतिहासिक अथवा धार्मिक संदर्भों तक सीमित नहीं है। आज रामायण विश्व के अनेक देशों में सांस्कृतिक पहचान, अकादमिक शोध, पर्यटन, प्रदर्शन कलाओं तथा अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक संवाद का महत्वपूर्ण आधार बन चुकी है। आधुनिक संचार माध्यमों, डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा वैश्विक सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने रामायण की पहुँच को और अधिक व्यापक बनाया है। परिणामस्वरूप यह महाकाव्य आज भी विश्व की विभिन्न सभ्यताओं के बीच संवाद, साझा सांस्कृतिक मूल्यों तथा मानवीय आदर्शों के सेतु के रूप में कार्य कर रहा है।

6.1 वर्तमान वैश्विक स्थिति

वर्तमान समय में भगवान श्रीराम एवं रामायण का अध्ययन केवल भारत तक सीमित नहीं है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों, शोध संस्थानों तथा सांस्कृतिक संगठनों में रामायण पर इतिहास, साहित्य, धर्म, मानवशास्त्र, तुलनात्मक संस्कृति तथा सभ्यता अध्ययन के अंतर्गत शोध कार्य निरंतर किए जा रहे हैं। अनेक देशों में रामायण के स्थानीय संस्करणों का संपादन, अनुवाद, संरक्षण तथा तुलनात्मक अध्ययन भी जारी है।

दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों में रामायण आज भी राष्ट्रीय सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण अंग है। भारत, नेपाल, थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया तथा लाओस जैसे देशों में सांस्कृतिक समारोहों, राष्ट्रीय उत्सवों तथा सार्वजनिक प्रस्तुतियों में रामायण की निरंतर उपस्थिति इसकी जीवंतता को प्रमाणित करती है। साथ ही, प्रवासी भारतीय समुदायों ने भी विश्व के अनेक देशों में रामायण परंपरा के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

6.2 सांस्कृतिक कूटनीति

समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संस्कृति को देशों के बीच सहयोग और विश्वास निर्माण का प्रभावी माध्यम माना जाता है। इस संदर्भ में भगवान श्रीराम एवं रामायण भारत की सांस्कृतिक कूटनीति (Cultural Diplomacy) के महत्वपूर्ण आधारों में से एक हैं। भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया के अनेक देशों के बीच आयोजित सांस्कृतिक उत्सव, रामायण महोत्सव, नृत्य-नाट्य प्रस्तुतियाँ, शैक्षणिक सम्मेलन तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम साझा ऐतिहासिक विरासत को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

रामायण की साझा परंपरा विभिन्न देशों के बीच ऐतिहासिक निकटता तथा सांस्कृतिक संबंधों को समझने का अवसर प्रदान करती है। यह

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि वर्तमान में भी सहयोग, संवाद और पारस्परिक सम्मान का महत्वपूर्ण माध्यम है। इस प्रकार रामायण सांस्कृतिक विरासत को आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों से जोड़ने वाली एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में उभरती है।

6.3 पर्यटन एवं सांस्कृतिक पर्यटन

भगवान श्रीराम एवं रामायण से जुड़े ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों का महत्व पर्यटन के क्षेत्र में भी निरंतर बढ़ रहा है। भारत में अयोध्या, चित्रकूट, पंचवटी, रामेश्वरम् तथा अन्य स्थलों के साथ-साथ नेपाल का जनकपुर, श्रीलंका के रामायण से जुड़े स्थल, इंडोनेशिया का प्रांबानन मंदिर, कंबोडिया का अंगकोर परिसर तथा थाईलैंड के सांस्कृतिक स्मारक अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

रामायण आधारित पर्यटन केवल धार्मिक यात्राओं तक सीमित नहीं है। यह इतिहास, संस्कृति, स्थापत्य, कला तथा सभ्यता अध्ययन में रुचि रखने वाले शोधार्थियों और पर्यटकों के लिए भी महत्वपूर्ण आकर्षण का केंद्र है। इस प्रकार रामायण सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के साथ-साथ स्थानीय अर्थव्यवस्था, सांस्कृतिक उद्योगों तथा अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को भी नई दिशा प्रदान करती है।

6.4 शिक्षा एवं अकादमिक शोध

रामायण आज विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में तुलनात्मक साहित्य, दक्षिण एशियाई अध्ययन, धर्म अध्ययन, इतिहास, संस्कृति एवं मानवशास्त्र जैसे विषयों के अंतर्गत अध्ययन और शोध का महत्वपूर्ण विषय है। विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध रामायण के संस्करणों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल साहित्यिक विकास को समझने में सहायक है, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सभ्यतागत संपर्क तथा सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं को भी स्पष्ट करता है।

डिजिटल अभिलेखागार, पांडुलिपि संरक्षण परियोजनाएँ, ऑनलाइन शोध डेटाबेस तथा अंतरराष्ट्रीय अकादमिक सहयोग ने रामायण अध्ययन को नई गति प्रदान की है। इससे विभिन्न देशों में संरक्षित रामायण परंपराओं का तुलनात्मक एवं अंतःविषयक अध्ययन अधिक व्यवस्थित रूप से संभव हो रहा है।

6.5 वैश्विक चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

यद्यपि भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रभाव व्यापक है, फिर भी उनके अध्ययन एवं संरक्षण के समक्ष अनेक चुनौतियाँ विद्यमान हैं। कुछ क्षेत्रों में प्राचीन पांडुलिपियों का संरक्षण, ऐतिहासिक स्थलों का रखरखाव, लोकपरंपराओं का लुप्त होना तथा प्रमाणिक स्रोतों की सीमित उपलब्धता गंभीर चिंताओं का विषय है। इसके अतिरिक्त अनेक स्थानीय रामायण परंपराओं पर अभी भी पर्याप्त अकादमिक शोध नहीं हो पाया है। दूसरी ओर, आधुनिक प्रौद्योगिकी, डिजिटल संरक्षण, अंतरराष्ट्रीय शोध सहयोग तथा सांस्कृतिक विरासत के प्रति बढ़ती वैश्विक जागरूकता नई संभावनाएँ भी प्रस्तुत करती है। यदि विभिन्न देशों के शोध संस्थान, विश्वविद्यालय तथा सांस्कृतिक संगठन संयुक्त रूप से कार्य करें, तो रामायण की वैश्विक परंपराओं का अधिक व्यापक, प्रमाण-आधारित एवं बहुआयामी अध्ययन संभव हो सकेगा। इससे न केवल भारतीय संस्कृति के अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को बेहतर ढंग से समझा जा सकेगा, बल्कि विश्व की साझा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य यह स्पष्ट करता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण केवल ऐतिहासिक अध्ययन का विषय नहीं हैं, बल्कि आज भी सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, शिक्षा, पर्यटन तथा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद के प्रभावशाली माध्यम बने हुए हैं। आधुनिक विश्व में उनकी प्रासंगिकता इस तथ्य में निहित है कि वे विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद, सह-अस्तित्व तथा साझा मानवीय मूल्यों को सुदृढ़ करने की क्षमता रखते हैं। यही कारण है कि रामायण की परंपरा अतीत की धरोहर होने के साथ-साथ वर्तमान और भविष्य की वैश्विक सांस्कृतिक चेतना का भी महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है।

7. निष्कर्ष

7.1 प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति की ऐसी अमूल्य धरोहर हैं, जिनका प्रभाव भारतीय उपमहाद्वीप से कहीं अधिक व्यापक रहा है। उपलब्ध ऐतिहासिक, साहित्यिक, पुरातात्त्विक तथा सांस्कृतिक साक्ष्य यह संकेत करते हैं कि दक्षिण एवं दक्षिण-पूर्व एशिया सहित विश्व के अनेक क्षेत्रों में रामायण ने स्थानीय समाजों के सांस्कृतिक विकास, साहित्य, कला, स्थापत्य, लोकजीवन तथा नैतिक मूल्यों को गहराई से प्रभावित किया है।

यह अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि रामायण का वैश्विक प्रसार किसी राजनीतिक अथवा सैन्य विस्तार का परिणाम नहीं था। इसके विपरीत, यह सांस्कृतिक संवाद, व्यापारिक संपर्क, धार्मिक आदान-प्रदान, विद्वानों के आवागमन तथा स्थानीय समाजों द्वारा भारतीय सांस्कृतिक तत्वों के स्वैच्छिक आत्मसात की दीर्घकालीन प्रक्रिया का परिणाम था। इसी कारण विभिन्न देशों में रामायण के अनेक स्थानीय स्वरूप विकसित हुए, जिन्होंने अपनी सांस्कृतिक विशिष्टताओं को सुरक्षित रखते हुए भी मूल मानवीय मूल्यों को अक्षुण्ण बनाए रखा।

7.2 शोध प्रश्नों के उत्तर

प्रस्तुत शोध में निर्धारित शोध प्रश्नों के आधार पर उपलब्ध ऐतिहासिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। अध्ययन के परिणामस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति के ऐसे वैश्विक प्रतीक हैं, जिनकी उपस्थिति केवल धार्मिक परंपराओं तक सीमित नहीं है। विभिन्न देशों में विकसित स्थानीय रामायण परंपराएँ, साहित्यिक कृतियाँ, स्थापत्य स्मारक, नृत्य-नाट्य, लोककलाएँ तथा सांस्कृतिक अनुष्ठान इस बात के प्रमाण हैं कि रामायण ने विविध सभ्यताओं के सांस्कृतिक विकास को प्रभावित किया है।

शोध से यह भी स्पष्ट हुआ कि भारत से बाहर रामायण का प्रसार मुख्यतः व्यापारिक संपर्कों, समुद्री मार्गों, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान, विद्वानों के आवागमन तथा स्थानीय राजवंशों के संरक्षण के माध्यम से हुआ। इस प्रक्रिया में प्रत्येक समाज ने रामायण को अपने सांस्कृतिक परिवेश के अनुरूप पुनः व्याख्यायित किया, जिससे अनेक स्थानीय संस्करण विकसित हुए। यद्यपि इन संस्करणों में भाषाई, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है, तथापि भगवान श्रीराम के मूल आदर्श—सत्य, धर्म, मर्यादा, न्याय, कर्तव्य एवं लोककल्याण—सभी परंपराओं में समान रूप से विद्यमान रहे।

अध्ययन यह भी संकेत करता है कि समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भगवान श्रीराम एवं रामायण की प्रासंगिकता निरंतर बनी हुई है।

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय शोध, पर्यटन, प्रदर्शन कलाओं तथा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद के माध्यम से उनकी उपस्थिति आज भी सक्रिय एवं प्रभावशाली है। इस प्रकार शोध के सभी प्रमुख प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर संतोषजनक रूप से प्राप्त होते हैं।

7.3 समग्र विश्लेषण

प्रस्तुत शोध का समग्र विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण का वैश्विक प्रभाव किसी एक धार्मिक परंपरा, राजनीतिक विस्तार अथवा सांस्कृतिक वर्चस्व का परिणाम नहीं है। इसके विपरीत, यह मानव सभ्यता के इतिहास में सांस्कृतिक संवाद, बौद्धिक आदान-प्रदान तथा स्थानीय समाजों द्वारा बाह्य सांस्कृतिक तत्वों के रचनात्मक आत्मसात का उत्कृष्ट उदाहरण है। यही विशेषता भारतीय संस्कृति को विश्व की अन्य प्राचीन सभ्यताओं से विशिष्ट बनाती है।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि विभिन्न देशों में रामायण के स्थानीय स्वरूपों का विकास सांस्कृतिक विविधता और सांस्कृतिक एकता—दोनों का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है। एक ओर प्रत्येक समाज ने अपनी भाषा, कला, धार्मिक परंपराओं और सामाजिक संरचना के अनुरूप रामकथा का पुनर्सृजन किया, वहीं दूसरी ओर भगवान श्रीराम के मूल जीवन-मूल्य—सत्य, मर्यादा, करुणा, न्याय, त्याग, कर्तव्य एवं लोककल्याण—लगभग सभी परंपराओं में सुरक्षित रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि रामायण की शक्ति केवल उसके कथानक में नहीं, बल्कि उसके सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों में निहित है।

ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्यों, साहित्यिक कृतियों, स्थानीय रामायणों, स्थापत्य स्मारकों, नृत्य-नाट्यों तथा लोकपरंपराओं के तुलनात्मक अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति का वैश्विक विस्तार मुख्यतः सांस्कृतिक आकर्षण (Cultural Attraction), ज्ञान-विनिमय तथा सामाजिक स्वीकार्यता पर आधारित था। यह विस्तार किसी सैन्य अभियान या राजनीतिक प्रभुत्व का परिणाम नहीं था, बल्कि परस्पर सम्मान, सांस्कृतिक संवाद और सभ्यतागत आदान-प्रदान की दीर्घकालीन प्रक्रिया से विकसित हुआ। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के अनेक तत्व स्थानीय संस्कृतियों के साथ समन्वित होकर नए सांस्कृतिक रूपों में विकसित हुए।

समकालीन वैश्विक संदर्भ में यह अध्ययन यह भी संकेत करता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं हैं। आज भी वे सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, अकादमिक शोध, सांस्कृतिक पर्यटन तथा वैश्विक सांस्कृतिक संवाद के प्रभावशाली माध्यम हैं। वर्तमान समय में जब विश्व विविधता, सह-अस्तित्व और साझा मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना की आवश्यकता अनुभव कर रहा है, तब रामायण के आदर्श वैश्विक स्तर पर नई प्रासंगिकता प्राप्त करते हैं।

अतः उपलब्ध साक्ष्यों, तुलनात्मक अध्ययनों तथा ऐतिहासिक विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भगवान श्रीराम एवं रामायण भारतीय संस्कृति के ऐसे वैश्विक प्रतीक हैं, जिन्होंने विभिन्न देशों की सांस्कृतिक स्मृति, साहित्य, कला, स्थापत्य, लोकजीवन तथा नैतिक चिंतन को गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रभाव केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि वर्तमान एवं भविष्य के सांस्कृतिक संवाद की भी महत्वपूर्ण आधारशिला है।

7.4 भविष्य के अध्ययन की संभावनाएँ

प्रस्तुत शोध भगवान श्रीराम एवं रामायण की वैश्विक उपस्थिति का एक समग्र परिचय प्रस्तुत करता है, तथापि इस क्षेत्र में अभी भी अनेक आयाम ऐसे हैं जिन पर विस्तृत अनुसंधान की आवश्यकता है। विशेष रूप से दक्षिण-पूर्व एशिया के विभिन्न देशों में संरक्षित स्थानीय रामायण पांडुलिपियों, अभिलेखों तथा लोकपरंपराओं का तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव को और अधिक स्पष्ट कर सकता है। इसी प्रकार मध्य एशिया, पूर्वी एशिया तथा प्रवासी भारतीय समुदायों में विकसित रामायण परंपराओं का व्यवस्थित अध्ययन भी भविष्य के शोध के लिए महत्वपूर्ण दिशा प्रदान करेगा।

डिजिटल मानविकी (Digital Humanities), सांस्कृतिक मानचित्रण (Cultural Mapping), अभिलेखीय डिजिटलीकरण तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित पांडुलिपि अध्ययन जैसी आधुनिक अनुसंधान पद्धतियाँ भी इस क्षेत्र में नई संभावनाएँ प्रस्तुत करती हैं। विभिन्न देशों के विश्वविद्यालयों, संग्रहालयों तथा सांस्कृतिक संस्थानों के मध्य संयुक्त शोध परियोजनाएँ रामायण की वैश्विक परंपराओं का अधिक प्रमाणिक एवं बहुआयामी दस्तावेजीकरण करने में सहायक हो सकती हैं।

भविष्य में तुलनात्मक सभ्यता अध्ययन, सांस्कृतिक कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, प्रदर्शन कलाओं, लोकसाहित्य तथा सांस्कृतिक विरासत संरक्षण के संदर्भ में भी भगवान श्रीराम एवं रामायण पर व्यापक शोध की आवश्यकता बनी रहेगी। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन न केवल उपलब्ध ज्ञान को समेकित करने का प्रयास है, बल्कि भविष्य के शोधार्थियों के लिए नए प्रश्नों, नई दिशाओं तथा व्यापक अकादमिक विमर्श की आधारभूमि भी प्रदान करता है।

संदर्भ सूची

1. Bhavabhuti. Uttara-Rāmacarita. Delhi: Motilal Banarsidass; 2003.
2. Kamban. Iramavataram (Kamba Ramayanam). Annamalai: Annamalai University; 1992.
3. Tulsidas G. Śrī Rāmacaritamānasa. Gorakhpur: Gita Press; 2014.
4. Valmiki. The Valmiki Ramayana. Debroy B, translator. Vol. 1–3. New Delhi: Penguin Random House India; 2017.
5. Adhyatma Ramayana. Gorakhpur: Gita Press; 2018.
6. Ananda Ramayana. Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Series Office; 2015.
7. Bhānubhakta Ācārya. Bhānubhakta Rāmāyaṇa. Kathmandu: Sajha Prakashan; 2013.
8. Kakawin Ramayana. Jakarta: Yayasan Pustaka Obor Indonesia; 2011.
9. Phra Lak Phra Lam. Vientiane: Ministry of Information and Culture, Lao PDR; 2009.
10. Ramakien. Bangkok: Fine Arts Department, Government of Thailand; 2007.
11. Reamker. Phnom Penh: Royal University of Fine Arts; 2008.
12. Hikayat Seri Rama. Kuala Lumpur: Dewan Bahasa dan Pustaka; 2005.
13. Yama Zatdaw. Yangon: Universities Historical Research Centre; 2010.

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

14. Dasaratha Jataka. Oxford: Pali Text Society; 1995.
15. Vimalasuri. Paumacariya. Prakrit Text Society; 2004.
16. Kampan. Kamba Ramayanam. New Delhi: Sahitya Akademi; 2009.
17. Basham AL. The wonder that was India. New Delhi: Picador India; 2004.
18. Bulcke K. Ramkatha: Utpatti aur Vikas. Prayagraj: Hindi Parishad; 1997.
19. Coedès G. The Indianized states of Southeast Asia. Cowing SB, translator. Honolulu (HI): University of Hawai'i Press; 1968.
20. Goldman RP, editor. The Ramayana of Valmiki: An epic of ancient India. Vol. 1–7. Princeton (NJ): Princeton University Press; 1984–2022.
21. Keay J. India: A history. 2nd ed. New York (NY): Grove Press; 2011.
22. Majumdar RC. Suvarnadvipa: Ancient Indian colonies in the Far East. Kolkata: Firma KL Mukhopadhyay; 1963.
23. Pollock S. The language of the gods in the world of men. Berkeley (CA): University of California Press; 2006.
24. Ramanujan AK. Many Ramayanas: Five examples and three thoughts on translation. In: Richman P, editor. *Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia*. Berkeley (CA): University of California Press; 1991. p. 22–49.
25. Ray HP. The winds of change: Buddhism and the maritime links of early South Asia. New Delhi: Oxford University Press; 1994.
26. Richman P, editor. *Many Ramayanas: The Diversity of a Narrative Tradition in South Asia*. Berkeley (CA): University of California Press; 1991.
27. Singh U. A history of ancient and early medieval India. New Delhi: Pearson; 2008.
28. Thapar R. Early India: From the origins to AD 1300. Berkeley (CA): University of California Press; 2002.
29. Lutgendorf P. The life of a text: Performing the Ramcharitmanas of Tulsidas. Berkeley (CA): University of California Press; 1991.
30. Brockington JL. The Sanskrit epics. Leiden: Brill; 1998.
31. Sharma A. Hinduism as a missionary religion. Albany (NY): State University of New York Press; 2008.
32. Hiltebeitel A, editor. *Rethinking the Mahabharata: A Reader's Guide to the Education of the Dharma King*. Chicago (IL): University of Chicago Press; 1999.
33. Archaeological Survey of India. Official publications and archaeological reports. New Delhi: Government of India.
34. École française d'Extrême-Orient. Research on South and Southeast Asian civilizations.
35. Indira Gandhi National Centre for the Arts. Cultural archives and knowledge resources. New Delhi: Ministry of Culture, Government of India.
36. Indian Council of Historical Research. Research publications and historical resources. New Delhi.
37. International Association of Sanskrit Studies. Research resources in Sanskrit and Indology.
38. National Mission for Manuscripts. Manuscript heritage of India. New Delhi: Ministry of Culture, Government of India.
39. Sahitya Akademi. Indian literary heritage publications. New Delhi: Government of India.
40. UNESCO. World Heritage Centre. Paris: UNESCO.
41. UNESCO. Intangible Cultural Heritage. Paris: UNESCO.
42. ISEAS – Yusof Ishak Institute. Southeast Asian cultural and historical studies. Singapore.
43. Archaeological Survey of India. ASI Digital Library. New Delhi.
44. Digital Library of India. Digital collections.
45. Google Books. Digitized books and historical publications.
46. HathiTrust Digital Library. Digital academic library.
47. Indira Gandhi National Centre for the Arts. IGNCA Digital Collections. New Delhi.
48. Internet Archive. Digital library of historical books and manuscripts.
49. National Digital Library of India. Digital academic repository.
50. UNESCO. UNESCO Digital Library. Paris: UNESCO.
51. World Digital Library. Cultural heritage manuscripts and rare collections. Washington (DC): Library of Congress.
52. JSTOR. Digital archive of scholarly journals, books, and primary sources.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author

डॉ. रवि कुमार अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त विद्वान हैं। वह स्पेनिश भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज और राजनीति पढ़ाते हैं। उन्होंने कई वर्षों तक अंतरराष्ट्रीय विदयार्थियों को भारत अध्ययन (India Studies) और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन कार्य किया है। वे प्रथम त्रिभाषी स्पेनिश-अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोश के सह-संपादक हैं और उन्होंने व्यापक स्तर पर शोध कार्य किए हैं। इनके शोध रुचियों में संस्कृति अध्ययन (Culture Studies), आलोचनात्मक सिद्धांत (Critical Theory), मीडिया अध्ययन (Media Studies) और लातिन अमेरिकी इतिहास (Latin American History) शामिल हैं।

डॉ. धरवेश कठेरिया जनसंचार के क्षेत्र में अध्यापन, शोध एवं अकादमिक लेखन से जुड़े प्रतिष्ठित विद्वान हैं। वर्तमान में वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) के जनसंचार विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। उनके शोध की प्रमुख रुचियाँ मीडिया अध्ययन, जनसंचार के विभिन्न आयाम, संचार सिद्धांत तथा समकालीन सामाजिक विमर्श हैं।

© 2026 डॉ. रवि कुमार. डॉ. धरवेश कठेरिया. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/